बागड़ी गी तिमाई पतरिका

आपणो बागड़, आपणी बोली

2019

अपरेल ऊं जून

आडी (पहेली)

1.उजाड़ मं झींटा खिंडाया
खड़्यो हैं – सरकणो

2.दो बां हैं नस कोनी
सीताहरण करणैं मं काबल हैं
ना ई राम हैं ना ई रावण - कोट

मुहावरा

1.जांवतैं चोर गा झींटा ई चोखा – भागते हुए चोर से कुछ भी हाथ लग जाये वहीं अच्छा है।

2.जावण लाग्यां दूद जमैं –
ठण्डे स्वभाव से हर काम को किया जा सकता है।

3. जकैं गाम मं लोभी बसैं निरधन भुखो सोवैं क्यूं – लालची बोहरा अधिक ब्याज के लालच में गरीब को भी उधार देता है।

सुविचार

1.सगळां नैं पढाओ, संस्करति बचाओ।
2. रिपिया गैं मोल खुसी ना खरीदो, जींवतैं जी बेटी नैं ना बेचो अर ना खरीदो।
3. पुराणी सोच नैं अब कोनी निभाणी, नूई समाज की नूई सोच ल्याणी।
4. आओ परयावरण बचावां, सगळां गो जीवन चोखो बणावां।

nirmaan
empowering communities

सिरकारी योजना

कमाई – खुद सायता गुट (स्वयं सहायता समूह)

“जिला गरामीण बिकास संस्था” गो मकसद है लोगां गो सायता गुट बणाणो अर फेर छोटो काम-धंदो सरू करनो।

1.समन्दी बिभाग

केन्दर सिरकार:- “ग्रामीण विकास मंत्रालय” गी बेबसायट पर देखो।

राजस्तान सिरकार:- “जिला ग्रामीण विकास अधिकारी और पंचायती राज” गी बेबसायट पर देखो।

2.हक

“स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना” ई बेबसायट पर देखो।

* हरेक बलोक गै परवार गो 10 ऊं 20 लोगां गो “खुद सायता गुट” बणाणै खातर बुलावो द्यां हां।
* थोड़ै टेम बाद “खुद सायता गुट” बेंक ऊं लोन खातर लायक है।
* “खुद सायता गुट” आपगो काम-धंदो सरू करै है।

3.अरजी गो तरीको (कामयाबी गो मोको 50 परतिसत) टेम गी हद 6 म्हीना)

* “जिला ग्रामीण विकास अधिकारी” गी बेबसायट पर देखो।

4.दाब (जे अरजी कामयाब ना होवै तो)

* “जिला ग्रामीण विकास अधिकार” गी बेबसायट पर देखो।

भजन

मुखड़ो के देखै दरपण मं

दया-धरम कोनी मन मं मुखड़ो के देखै दरपण मं.....टेर

कागद गी एक नाव बणाई, छोडी गैरै-जळ मं.....।

धरमी-धरमी पार उतरग्या, पापी डुब्या जळ मं.....।।

मुखड़ो के देखै दरपण मं.....टेर

पेच मार गे बांदै पगड़ी, तेल लगावै झुलफन मं.....।

इण ताली मं घास उगैला, ढोर चरैला बन मं.....॥

मुखड़ो के देखै दरपण मं.....टेर

आम गी डाळी कोयल राजी, सूआ राजी बन मं.....।

घरवाळी तो घर मं राजी, तपसी राजी बन मं.....।।

मुखड़ो के देखै दरपण मं.....टेर
कोडी-कोडी माया जोड़ी, जोड़ धरी बरतण मं.....।
केवै कबीर सुणो भाई साधो, रेगी मन गी मन मं.....।।
मुखड़ो के देखै दरपण मं....टेर

धमाल

धोळागड मं राज

अहे...धोळागड मं ए राज तुम्हारो देबी ए धोळागड मं...टेर
अहे...के गज ऊंचो थ्हारो रे भवन देवरो...।।
के गज ऊंडी गज नींवड़ली रे धोळागड मं...टेर
अहे...नो गज ऊंचो थ्हारो रे भवन देवरो...॥
दस गज ऊंडी थ्हारी नींवड़ली रे धोळागड मं...टेर
अहे...के लख आवै थ्हारै रे बाळक बांजड़ी...।।
ए के लख आवै रे झड़ूलै वाळी ए धोळागड मं...टेर
अहे...नो लख आवै थ्हारै रे बाळक बांजड़ी...।।
दस लख आवै रे झड़ूलै वाळी रे धोळागड मं...टेर

भजन

मन रे पीले नाम गो होको।

मन रे पी ले नाम गो होको। टेर
फेर हवै नहीं धोखो
मन रे पी ले नाम गो होको। टेर
नाम गो होको चिलम जरणा गी नेचगो बांधो नेछो
सत सबदां गी नड़ी लगाले आवै तमाखू चोखो
मन रे पी ले नाम गो होको। टेर
विरह गी अग्नि लगन तमाखू
धीरे-धीरे धूंवो रोको
ईं होकै नै कोई हरिजन पीवै पावै मुक्ति गो मोको
मन रे पी ले नाम गो होको। टेर
जे थ्हारी चिलम धूंवो ना देवै फेरो बिराग वाळो डोको
खांचो घूंट होवै उजिआळो देखो अजब झरोखो
मन रे पी ले नाम गो होको। टेर
करिया भजन सेन दी सतगुरू काया नगर नं गोखो
कह परेमदास ऐसो परेम लगाओ
लाग्यो परेम होयो सोखो
मन रे पी ले नाम गो होको। टेर

कहाणी

मोत गी खुसी

एकर एक बादस्या आपगै मंतरी ऊं निराज होग्यो, पण मंतरी नै ईं बात गी चिंता कोनी ही। बो भगवान गो भगत हो। बादस्या जद भी मंतरी नै देखतो, बिनै लागतो बो भगवान नै मान'र बिंगो अपमान करै। असल मं बादस्या खुद नै भगवान ऊं ई मोटो मानतो। बादस्या गी जलन बदती गेई अर एक दिन बो गाडो बिचार कर्यो कि बिंगै जलम दिन गै मोकै पर बो बिनै फंदै पर लटका देसी। मंतरी गै जलम दिन पर बिंगै कुणबै गै मांई मोटी पाल्टी राखी अर भजन-कीरतन गो कारयकरम राख्यो। बिमै बोळा मिनख आया। जना बादस्या गो दूत एक लिखेड़ो परवानो ले'र आयो। मंतरी परवानै नै पड़्यो अर मसती मं नाचण लागग्यो। जद बादस्या नै ईं बात गो ठा पड़्यो तो बो मंतरी गै घरै गेयो अर बोल्यो, तनै ठा है नी कि आज आथणगै छ बजे तनै फंदै पर लटका दियो जासी। मंतरी बोल्यो, जी महाराज जद ई तो मैं मेरी मोत गी खुसी मनाऊं हूं। जलम दिन अर सुब दिन पर सगळा मिनख आपणै सागै होवै, पण ईयां गा भागी कम ई होवै जका मोत गै दिन आपगै मिनख गै सागै होवै। मैं ईं जुग नै सगलां गै बीच गै माईं नाचतो अर गावंतो छोड'र जास्युं। खुसी गो इं ऊं मोटो मोको ओर के हो सकै है? आ सुण'र बादस्या चक्कर मं पड़ग्यो। बीं टेम ई मंतरी गी सजा माफ करदी अर खुद भी बिंगै जलम दिन पर नाचण लागग्यो।

सीख:- मोत नै देख'र घबराणो नईं चईयै।

कहाणी

भेळा मं ई तागत होवै है

एकर एक सिकारी कबूतरां नै पकड़न खातर जाळ लगायो। थोड़ी सी देर मं बिमै कबूतर आर फसग्या कबूतर बारै निकळन खातर भोत जोर लगायो फेर बी बे बारै कोनी निकळया बामै एक डिमाकी कबूतर हो बण केयो जे आपां सगळा मिलगे जोर लगावां तो आपां ईं जाळ नै लेगे उड जास्यां बां सगळां मिल गे जोर लगायो अर बे जाळ नै लेगे उडग्या।

सीख- भेळां मं ई तागत हवै है।

संपादक
श्रवण कुमार, मुकेश कुमार योगी
और रतन लाल योगी

सम्पर्क
निर्माण सोसायटी
57 एन पी, रायसिंह नगर, श्रीगंगानगर,
राजस्थान-335051
Mob.-7073195304, 9660663776
Email- rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
Web- www.nirmaan.org.in